पाठ 3 मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त: जीवन परिचय

परिचय

हिंदी साहित्य में जब भी किसी ऐसे कवि का नाम लिया जाता है जिसने राष्ट्रीय चेतना को स्वर प्रदान किया, तो मैथिलीशरण गुप्त का नाम सबसे पहले आता है। उन्हें उनके जीवनकाल में ही "राष्ट्रकवि" की उपाधि प्राप्त हुई। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, गौरवशाली इतिहास, धर्म, आदर्श, और सामाजिक मूल्यों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इस लेख में हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक यात्रा, प्रमुख रचनाएँ, काव्यगत विशेषताएँ, और उनके प्रभाव पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

जीवन परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झाँसी जनपद के चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण दास भी साहित्यप्रेमी थे और स्वयं कवि भी थे। इसी साहित्यिक वातावरण में पले-बढ़े मैथिलीशरण गुप्त ने प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त की। उन्होंने कोई औपचारिक डिग्री नहीं ली, फिर भी उनकी विद्वत्ता अद्वितीय थी।

उन्हें संस्कृत, बांग्ला, मराठी, और अंग्रेज़ी भाषाओं का गहरा ज्ञान था। इस बहुभाषीय अध्ययन ने उनके साहित्य को गहराई और व्यापकता दी। उनके छोटे भाई सियारामशरण गुप्त भी हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे, जिनका उल्लेख करना यहां प्रासंगिक है।

राष्ट्रकवि की उपाधि और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ाव

मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक और वैचारिक झुकाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ओर था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस में देशप्रेम, स्वराज्य, और राष्ट्रबोध की भावना जागृत की। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया।

उनकी काव्यधारा ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को प्रेरित किया। यही कारण था कि उन्हें उनके जीवनकाल में ही महात्मा गांधी ने “राष्ट्रकवि” की उपाधि से सम्मानित किया।

काव्य की विषयवस्तु और विशेषताएँ

मैथिलीशरण गुप्त की कविता की भाषा खड़ी बोली है जो सहज, सुबोध और सरस है। उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठता स्पष्ट दिखाई देती है, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक गंभीर और प्रभावशाली बन जाती हैं। उनके काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय संस्कृति और इतिहास का चित्रण:

गुप्त जी की कविताओं में भारतीय संस्कृति की गहराई, पुराणों की कथाएँ, महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों से प्रेरणा मिलती है। उन्होंने भारत के स्वर्णिम अतीत को अपनी कविता के माध्यम से वर्तमान पाठकों के समक्ष जीवंत किया।

2. नारी चेतना का सम्मान:

गुप्त जी ने नारी पात्रों को विशेष आदर और गरिमा के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी काव्यकृति 'यशोधरा' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उन्होंने गौतम बुद्ध की पत्नी के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है।

3. धार्मिक आस्था और आदर्शवाद:

गुप्त जी एक रामभक्त कवि थे। उनके काव्य में राम के चरित्र और जीवन की आदर्शता को अनेक रूपों में दर्शाया गया है। उन्होंने धार्मिक मूल्यों को मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

4. राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना:

गुप्त जी का साहित्य राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता, स्वराज्य की भावना, समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई और सामाजिक सुधार का संदेश दिया।

प्रमुख काव्य रचनाएँ

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ मात्रा में भी समृद्ध हैं और गुणवत्ता में भी। उनकी कुछ प्रमुख काव्यकृतियाँ इस प्रकार हैं:

1. साकेत:

यह उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है। इस महाकाव्य में उन्होंने उर्मिला जैसे उपेक्षित पात्र को केंद्र में रखकर रामकथा का विस्तार किया। 'साकेत' केवल रामकथा का पुनर्पाठ नहीं है, बल्कि यह नारी जीवन, विरह, और धर्म का अद्भुत चित्रण है।

2. यशोधरा:

इस काव्य में उन्होंने बुद्ध की पत्नी यशोधरा के मन की पीड़ा, त्याग और कर्तव्यबोध को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया है। यह रचना नारी विमर्श की दृष्टि से अद्वितीय है।

3. जयद्रथ वध:

महाभारत के युद्ध प्रसंग पर आधारित इस काव्य में वीर रस का ओजस्वी प्रयोग किया गया है। अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध, प्रतिज्ञा, और धर्म युद्ध की भावना इस काव्य में प्रखर रूप में उभरी है।

4. पंचवटी:

'पंचवटी' गुप्त जी की एक प्रसिद्ध खंडकाव्य रचना है, जिसमें रामायण के प्रसंगों को काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें राम, सीता और लक्ष्मण के वनवास के दौरान पंचवटी में बिताए गए समय का मार्मिक वर्णन है। सीता की पवित्रता, राम का त्याग और लक्ष्मण की भक्ति इस काव्य के मुख्य विषय हैं।

5. भारत-भारती:

'भारत-भारती' राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत एक ओजस्वी काव्य संग्रह है। इसमें भारत की गौरवशाली संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा और देशभक्ति की भावना को मुखरित किया गया है। यह रचना भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए प्रसिद्ध हुई।

6. द्वापर:

'द्वापर' महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित एक महाकाव्य है। इसमें युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, द्रौपदी और कृष्ण के चरित्रों के माध्यम से धर्म, न्याय और कर्तव्य का संदेश दिया गया है। गुप्त जी ने इसमें महाभारत के नैतिक संघर्ष को गहराई से चित्रित किया है।

7. सिंहावलोकन:

'सिंहावलोकन' एक विचारपूर्ण काव्य है, जिसमें समाज, धर्म और राष्ट्रीय जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इसमें गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति और आधुनिक विचारों के समन्वय पर बल दिया है।

8. विक्रमादित्य:

'विक्रमादित्य' ऐतिहासिक महत्व की रचना है, जिसमें राजा विक्रमादित्य की वीरता, न्यायप्रियता और प्रजा-हितैषी स्वभाव का गुणगान किया गया है। यह काव्य भारत के गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है।

कविता की शैली और भाषा

मैथिलीशरण गुप्त की कविता की भाषा खड़ी बोली में है जो उस समय ब्रजभाषा की काव्य परंपरा से हटकर एक नया प्रयोग था। खड़ी बोली को काव्यभाषा बनाने का श्रेय मुख्यतः मैथिलीशरण गुप्त और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे कवियों को जाता है।

गुप्त जी की भाषा में सरलता, प्रभावशीलता, और गंभीरता का सुंदर समन्वय मिलता है। उनके छंदों में लय और भाव का अद्भुत सामंजस्य होता है, जिससे पाठक उनके काव्य से सहज रूप से जुड़ जाते हैं।

काव्य में रामभक्ति का स्वर

गुप्त जी को रामभक्त कवि कहा जाता है। उन्होंने राम के जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। उनके लिए राम केवल एक ऐतिहासिक चरित्र नहीं, बल्कि एक धर्म और मर्यादा के प्रतीक हैं। उन्होंने रामकथा को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि नैतिक आदर्शों का प्रेरणास्रोत माना है।

'साकेत' में राम की अनुपस्थिति में उर्मिला का त्याग, संयम, और धैर्य इस बात का प्रमाण है कि गुप्त जी ने रामकथा को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन

मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी कविता को नए संस्कार, नई भाषा, और नई दिशा प्रदान की। उनके योगदान को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

1. खड़ी बोली का उत्कर्ष:

गुप्त जी ने खड़ी बोली को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाई और इसे काव्य की भाषा के रूप में स्थापित किया।

2. राष्ट्रवाद का प्रसार:

उनकी कविताओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने काव्य को जनजागरण का माध्यम बनाया।

3. नारी विमर्श का समर्थन:

उन्होंने अपनी कविताओं में नारी की पीड़ा, भावनाएँ, और समाज में उसकी भूमिका को गहराई से उकेरा।

4. धार्मिकता और आदर्शवाद:

उनकी कविताएँ धर्म और आदर्श का श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों की कथाओं को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया।

सम्मान और उपाधियाँ: मैथिलीशरण गुप्त

महान कवि मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी साहित्य में उनके अमूल्य योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित सम्मान और उपाधियाँ प्राप्त हुईं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना, नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना झलकती है, जिसके कारण उन्हें व्यापक मान्यता मिली।

प्रमुख सम्मान एवं उपाधियाँ:

1. राष्ट्रकवि की उपाधि:
   महात्मा गांधी ने मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया। उनकी काव्य-रचनाएँ, जैसे 'भारत-भारती', देशभक्ति और राष्ट्रीय जागरण की प्रेरणा बनीं।

2. राज्यसभा सदस्यता:
   भारत सरकार ने उनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया। इससे उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य और संस्कृति के विकास में योगदान देने का अवसर मिला।

3. पद्मभूषण सम्मान:

   सन **1954** में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया, जो देश के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक है।

4. हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान:

   उन्हें 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' द्वारा भी विशेष सम्मान प्रदान किया गया, जहाँ उनकी साहित्यिक सेवाओं को रेखांकित किया गया।

5. साहित्य अकादमी पुरस्कार (मरणोपरांत):

   हालाँकि उनके जीवनकाल में साहित्य अकादमी पुरस्कार की स्थापना नहीं हुई थी, लेकिन बाद में उनके योगदान को सदैव स्मरण किया जाता है।

मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक प्रभाव

मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी कविता को जो दिशा दी, वह आज भी कवियों और साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके काव्य की पंक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं। उन्होंने साहित्य को केवल सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का औज़ार बनाया।

उनके बाद की पीढ़ियों के कवियों ने उनके काव्य से प्रेरणा लेकर हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

निधन और स्मृति

12 दिसंबर **1964** को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का निधन हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवंत हैं। उनका साहित्य भारतीय संस्कृति, आदर्शों और इतिहास का अमूल्य धरोहर है। उनकी स्मृति में भारत सरकार और विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कार और संस्थान स्थापित किए गए हैं।

निष्कर्ष

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने कविता को राष्ट्रभक्ति, संस्कृति, और सामाजिक चेतना से जोड़ने का कार्य किया। वे केवल कवि नहीं, बल्कि साहित्यिक युग निर्माता थे। उनका साहित्य न केवल अतीत का गौरवगान करता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

प्रश्न – अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

उत्तर: 1

1. आदर्श मृत्यु: कवि का मानना है कि वही मृत्यु सुमृत्यु कहलाती है, जिसके बाद लोग उस व्यक्ति को याद करें, उसके कार्यों को प्रेरणा मानें और उसके दिखाए रास्ते पर चलें। ऐसा व्यक्ति भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच न रहे, लेकिन उसके महान कार्य और विचार पीढ़ियों तक जीवित रहते हैं। यही उसे अमर बना देते हैं।

2. पशु प्रवृत्ति और मनुष्यता: कवि बताते हैं कि जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता है, वह मनुष्यता के विपरीत और पशु प्रवृत्ति का परिचायक होता है। सच्ची मनुष्यता दूसरों के लिए जीने में है। जो व्यक्ति परोपकार के लिए अपना जीवन समर्पित करता है, वह मरकर भी अमर हो जाता है।

निष्कर्ष: सुमृत्यु वह है जो हमारे कर्मों के कारण हमें अमरत्व प्रदान करे और समाज को प्रेरणा दे।

प्रश्न 2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर: 2

1. उदार व्यक्ति वह होता है जिसकी जीवन गाथा उसकी मृत्यु के बाद भी किताबों में लिखी और पढ़ी जाती है। लोग उसे आदर्श मानकर उसका अनुसरण करते हैं।

2. वह व्यक्ति उदार होता है, जिसकी मृत्यु के बाद लोग उसके किए उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उसकी स्मृति में श्रद्धा से झुकते हैं।

3. उदार व्यक्ति का यश अमर होता है। उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी प्रशंसा युगों-युगों तक होती रहती है।

4. वही व्यक्ति उदार कहलाता है, जिसे संपूर्ण विश्व श्रद्धा और सम्मान के साथ नमन करता है और शुभ कार्यों में स्मरण करता है।

5. उदारता का प्रतीक वह व्यक्ति है जो सीमाओं से परे जाकर सभी को अपना मानता है। उसके मन में कभी पराएपन की भावना नहीं होती और वह संपूर्ण सृष्टि को अपनत्व का अनुभव कराता है।

प्रश्न 3. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर: 3 महान व्यक्तियों के उदाहरण

1. रंतिदेव: कवि बताते हैं कि भूख से पीड़ित होने के बावजूद रंतिदेव ने अपना भोजन स्वयं न खाकर उसे भूखे व्यक्ति को दे दिया।

2. दधीचि ऋषि: देवताओं के कल्याण के लिए उन्होंने अपने शरीर की हड्डियाँ तक दान कर दीं।

3. राजा उशीनर: कबूतर के प्राण बचाने के लिए उन्होंने भूखे बाज को अपने शरीर का मांस काटकर दे दिया।

4. वीर कर्ण: उन्होंने इंद्र को अपने शरीर से जुड़ा जन्मजात कवच और कुण्डल दान कर दिया।

कवि का संदेश:

इन महापुरुषों के उदाहरण के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि जो व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है, वही सच्चा और पूजनीय इंसान है। हमें दूसरों की सेवा और कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। सच्चा मानव वही है जो अपनी इच्छाओं से ऊपर उठकर दूसरों के हित के लिए कार्य करता है। ऐसा आचरण ही हमें वास्तविक मानव कहलाने के योग्य बनाता है।

प्रश्न 4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर: 4

(i) कवि के शब्द:

"रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में।
सनाथ जान आपको, करो न गर्व चित्त में।"

(ii) कवि का संदेश:

कवि ने 'मनुष्यता' विषय के अंतर्गत यह समझाया है कि हमें धन और संपत्ति जैसी क्षणिक वस्तुओं पर घमंड नहीं करना चाहिए। यह चीज़ें स्थायी नहीं होतीं और समय के साथ बदल जाती हैं। इसलिए, जो चीज़ें स्थिर नहीं हैं, उन पर गर्व करना उचित नहीं है। ऐसा करना मनुष्यता के विपरीत है।

(iii) सब सनाथ हैं:

इस संसार में सबका मालिक सर्वशक्तिमान परमात्मा है। इसलिए हर व्यक्ति सनाथ है, कोई भी अनाथ नहीं है। जब परमात्मा स्वयं हमारे रक्षक हैं, तो हमें किसी भी सांसारिक वस्तु के लिए गर्व नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 5. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 5

1. समानता का विचार: कवि के अनुसार, संसार में सभी मनुष्य एक दूसरे के भाई-भाई हैं। इस सोच को अपनाना ही सबसे बड़ा विवेक है।

2. एक परमपिता का सिद्धांत: हम सभी का परमपिता परमेश्वर एक है। चूंकि हम उसकी संतान हैं, इसलिए हम सभी वास्तविक रूप में भाई-बहन हैं। जैसे एक माता-पिता की संतानें आपस में भाई-बहन होती हैं, वैसे ही हम सब एक ही परमपिता की संतानें हैं।

3. भेदभाव का कारण: यदि हम सब एक ही परमपिता की संतान हैं, तो फिर संसार में यह बाहरी भेदभाव क्यों? इस पर कवि का मत है कि हर व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। अलग-अलग कर्मों के कारण जीवन में भिन्नताएं दिखती हैं, जिससे यह भेदभाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न 6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर: 6

1. मेल-जोल बनाए रखने का महत्व:

   कवि का मानना है कि सच्चा इंसान वही है जो दूसरों के साथ मेल-जोल बनाए रखे। मेल-जोल से प्रेम, आत्मीयता, और अपनापन बढ़ता है, जो शांति और संतोष का आधार है। प्रेम और मेलजोल के साथ रहना ही इंसानियत की पहचान है।

2. भिन्नता से बचाव:

   कवि कहते हैं कि हमें आपसी मतभेद और भिन्नता से बचना चाहिए। मतभेद बढ़ने पर कलह और विवाद जन्म लेते हैं, जो अशांति और भाईचारे की समाप्ति का कारण बनते हैं। अशांति का माहौल मनुष्यता को खत्म कर सकता है।

3. सहयोग और समर्थ भावना:

   कवि यह संदेश देते हैं कि एकजुट होकर चलने से सहयोग और आपसी समझ बढ़ती है। वही सच्चा मानव है जो अपने कार्यों में सफलता पाने के साथ-साथ दूसरों की सफलता में भी योगदान देता है।

प्रश्न 7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर: 7

1. दूसरों के लिए जीना:

   कवि के अनुसार, वास्तविक जीवन वही है जो दूसरों के हित में समर्पित हो। दूसरों की मदद करना और परोपकार करना ही सच्चे सुख का स्रोत है। ऐसे कार्यों से व्यक्ति को समाज में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती है। जो लोग परोपकार करते हैं, उन्हें न केवल जीवित अवस्था में सम्मान मिलता है बल्कि मृत्यु के बाद भी लोग उन्हें आदरपूर्वक याद करते हैं। इस प्रकार का जीवन जीने से आत्मा को परम शांति की अनुभूति होती है।

2. पशु प्रवृत्ति से बचना:

   कवि का मानना है कि केवल अपने स्वार्थ के लिए जीना एक पशु प्रवृत्ति है। जैसे एक पशु सिर्फ अपना पेट भरने के लिए चरागाह में चरता है, उसी प्रकार यदि मनुष्य भी केवल अपने लिए ही कार्य करता है, तो उसका जीवन भी पशु समान हो जाता है। मनुष्य जीवन का असली उद्देश्य दूसरों की भलाई करना है। यह जीवन हमें परोपकार के लिए दिया गया है, और इसका महत्व तभी है जब हम दूसरों की सेवा और मदद करने के लिए तत्पर रहें।

   परोपकार के कार्य ही मनुष्य को पशु से अलग और श्रेष्ठ बनाते हैं। यदि हम स्वार्थ में डूबे रहें, तो हम अपने मानवीय गुणों को खो देते हैं और मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं रहते। स्वार्थ को कवि ने पशुता माना है, जबकि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर 8: कवि 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि केवल मनुष्य का शरीर पाना ही मनुष्य होने की पहचान नहीं है। सच्चा मनुष्य वही है जिसमें मनुष्यता के गुण हों। कवि के अनुसार, मनुष्य कहलाने के लिए निम्नलिखित गुण अनिवार्य हैं:

1. परहित की भावना (मनुष्य वृत्ति):

   मनुष्य वह है जो दूसरों के लिए कार्य करता है। केवल स्वार्थ के लिए जीने वाला व्यक्ति पशु प्रवृत्ति का होता है। जो व्यक्ति अपनी परवाह किए बिना दूसरों के कल्याण के लिए जीता है, वही सच्चा मनुष्य है।

2. उदार हृदय:

   सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए अपना सब कुछ त्यागने को तैयार हो। उदाहरण के रूप में कवि ने राजा रंतिदेव, दधीचि, उशीनर और कर्ण का उल्लेख किया है, जिन्होंने मनुष्यता के लिए अपनी प्रिय वस्तुएं भी अर्पित कर दीं।

3. सहानुभूति:

   दूसरों के सुख-दुख को समझने और उसे महसूस करने की क्षमता मनुष्यता की पहचान है। किसी के सुख में खुश होना और दुख में दुखी होना सच्ची सहानुभूति है।

4. अभिमान रहित जीवन (निरभिमान):

   जो व्यक्ति धन-दौलत और अन्य सांसारिक वस्तुओं के लिए घमंड नहीं करता, वही सच्चा मनुष्य है। धन-सम्पत्ति अस्थायी है, इसलिए उस पर गर्व करना व्यर्थ है।

5. विश्व बंधुत्व:

   कवि के अनुसार, सभी मनुष्य एक ही परमपिता की संतानें हैं और इसलिए सब भाई-भाई हैं। यह भावना ही सच्चे मनुष्य की पहचान है।

6. मेल-जोल की भावना:

   मनुष्यों को आपस में हमेशा सौहार्द और मेल-जोल के साथ रहना चाहिए। परस्पर मतभेद और वैमनस्य से बचना आवश्यक है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

उत्तर: 1 भावार्थ:

इस पंक्ति में सहानुभूति (सहानुभूति और संवेदनशीलता) को महानतम संपत्ति बताया गया है। इसे धरती स्वयं भी सदैव अपने में समाहित किए हुए है। बुद्ध के करुणा और दया से भरे विचारों ने विरोध और संघर्ष को समाप्त कर दिया। विनम्र और शालीन लोक समाज उनके समक्ष सहजता से झुक गया, क्योंकि दया और सहानुभूति ने उनकी आत्मा को छू लिया।

- संदेश: दया और सहानुभूति में शक्ति है जो बड़े से बड़े विरोध को समाप्त कर सकती है।

2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,

दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

उत्तर:2 भावार्थ:

यहाँ साधारण वित्त (धन-संपत्ति) पर घमंड न करने की सीख दी गई है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सच्चा सहारा भगवान (त्रिलोकनाथ) हैं, जिनकी दया और मदद के विशाल हाथ हमेशा हमारे साथ हैं। कोई भी वास्तव में अनाथ नहीं है क्योंकि दीनबंधु (गरीबों के मित्र) ईश्वर सभी का ध्यान रखते हैं।

- संदेश:
  - आत्मनिर्भरता और विनम्रता बनाए रखें।
  - सांसारिक संपत्ति पर गर्व करने के बजाय, परमात्मा की कृपा पर भरोसा करें।

3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए;
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी ।

उत्तर: 3 भावार्थ:

इस पंक्ति में जीवन के उद्देश्य (अभीष्ट मार्ग) को खुशी और उत्साह के साथ पूरा करने का सुझाव दिया गया है। मार्ग में आने वाली विपत्तियों और बाधाओं को हंसते-हंसते दूर करने का साहस रखें। समूह में चलने पर मेल-जोल और एकता बनाए रखें, भिन्नता या तर्क-वितर्क से बचें। हर व्यक्ति को अपने पथ पर सतर्कता और ध्यान से चलते रहना चाहिए।

- संदेश:
  - जीवन में कठिनाइयों का सामना उत्साह से करें।
  - सामूहिकता और एकता का पालन करें।
  - सतर्क और विवेकशील रहते हुए अपने मार्ग पर दृढ़ रहें।

योग्यता विस्तार

1. अपने अध्यापक की सहायता से रंतिदेव, दधीचि, कर्ण आदि पौराणिक पात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर: 1 रंतिदेव, दधीचि और कर्ण भारतीय पौराणिक कथाओं के प्रमुख पात्र हैं, जो अपने परोपकार, त्याग और धर्म पालन के लिए विख्यात हैं। इनके बारे में जानकारी इस प्रकार है:

1. रंतिदेव

- पृष्ठभूमि: रंतिदेव एक प्राचीन राजा थे, जो अपने अद्वितीय परोपकार और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

- कहानी:
  रंतिदेव का जीवन त्याग और सेवा का प्रतीक है। एक बार उन्हें और उनके परिवार को 48 दिनों तक भूखा रहना पड़ा। जब उनके पास भोजन आया, तो वे इसे दूसरों के साथ बाँटने में भी संकोच नहीं करते। उन्होंने यह सिद्ध किया कि दूसरों की सेवा ही सच्चा धर्म है।
- संदेश: उन्होंने दिखाया कि मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के समान है।

2. दधीचि

- पृष्ठभूमि: दधीचि एक महान ऋषि थे, जिन्हें उनके अस्थि-दान के लिए स्मरण किया जाता है।
- कहानी:
  देवताओं और असुरों के युद्ध में, देवताओं को वज्र नामक अस्त्र बनाने के लिए दधीचि की हड्डियों की आवश्यकता थी। दधीचि ने सहर्ष अपने प्राण त्यागकर अपनी अस्थियाँ दे दीं।
- संदेश: उन्होंने यह संदेश दिया कि आत्मा अमर है और किसी महान उद्देश्य के लिए शरीर का त्याग करना सर्वोच्च धर्म है।

3. कर्ण

- पृष्ठभूमि: कर्ण महाभारत के एक प्रमुख पात्र थे, जो अपनी दानवीरता और साहस के लिए जाने जाते हैं।
- कहानी:
  कर्ण कुंती के पुत्र थे लेकिन उन्हें जन्म के बाद ही नदी में बहा दिया गया। वे सूतपुत्र के रूप में बड़े हुए और अर्जुन के प्रतिद्वंद्वी बने। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दान और धर्म के मार्ग पर बिताया। महाभारत के युद्ध में वे कौरवों के पक्ष में लड़े।
- संदेश: कर्ण की कहानी से दानशीलता, मित्रता और धर्म के प्रति निष्ठा का मूल्य समझा जा सकता है।

2. 'परोपकार' विषय पर आधारित दो कविताओं और दो दोहों का संकलन कीजिए। उन्हें कक्षा में सुनाइए ।

उत्तर 2- परोपकार पर आधारित दो कविताएँ और दो दोहे:

कविता **1:**

"परोपकार की महिमा"
परोपकार का पाठ सिखाते,
जीवन को संवारते हैं हम।
दूसरों का भला करके,
सच्चे सुख को पाते हैं हम।

कभी किसी के दुख में शामिल होकर,
उसकी मदद करने से,

मन को शांति मिलती है,
परोपकार से ही जीवन का उद्देश्य समझ में आता है।

हाथ बढ़ाना किसी की मदद में,
यह मानवता का दर्शन है,
सच्चा सुख वही जो,
दूसरों का दुःख हरने में है।

कविता **2:**

"दूसरों की मदद से जीवन"
निस्वार्थ जो दे, वही सच्चा,
परोपकार से जीवन में सुख छाए।
दूसरों के लिए जो जीते,
वही हर दिल में प्यारे होते जाएं।

अजनबी के दुख में शामिल होना,
सच्चे मन से मदद करना,
यही परोपकार की राह है,
जो दिल को शांति और संतुष्टि देता है।

दोहे **1:**

"परोपकार की राह में"
परोपकार से बढ़े भाग्य हमारा,
दूसरों की मदद से सुख समारा।

दोहे **2:**

"परोपकार का फल"
परोपकार से बढ़ता सुख सच्चा,
दूसरों का दुःख हरना सबसे अच्छा।

इन कविताओं और दोहों में परोपकार की महिमा और दूसरों के लिए जीने की बात की गई है, जो कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद होंगे।

परियोजना कार्य

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता 'कर्मवीर' तथा अन्य कविताओं को पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।

उत्तर 1- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता "कर्मवीर" और अन्य कविताएँ हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। 'कर्मवीर' कविता विशेष रूप से प्रेरणा देने वाली है, जिसमें कवि ने कर्म के महत्व को स्पष्ट किया है। यह कविता जीवन में मेहनत, ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करने की प्रेरणा देती है।

"कर्मवीर" कविता का सार:

इस कविता में कवि कर्म के महत्व को प्रमुखता से उजागर करते हैं। वह बताते हैं कि कार्य करने में ही आत्म-संतुष्टि और सफलता है। काम करने वाले व्यक्ति को ही समाज में आदर मिलता है, जबकि आलस्य और कर्तव्यहीनता किसी को भी सफलता नहीं दिला सकती। यह कविता एक प्रेरणा है जो हमें अपने कार्यों के प्रति निष्ठा और समर्पण की ओर अग्रसर करती है।

अन्य कविताएँ:

हरिऔध की अन्य कविताएँ भी समाज और जीवन की विभिन्न पहलुओं को छूती हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति, मानवता और नैतिकता के बारे में गहरे विचार प्रस्तुत होते हैं। इन कविताओं में कवि ने सरल और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उनका संदेश व्यापक स्तर पर पहुँचता है।

आप इन कविताओं को पढ़कर कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं, ताकि आपके सहपाठी भी इन रचनाओं से प्रेरित हों।

2. भवानी प्रसाद मिश्र की 'प्राणी वही प्राणी है' कविता पढ़िए तथा दोनों कविताओं के भावों में व्यक्त हुई समानता को लिखिए।

उत्तर 2- भवानी प्रसाद मिश्र की 'प्राणी वही प्राणी है' कविता और मनुष्यता कविता दोनों में मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच समानताएं और मानवता के प्रति गहरी समझ की बात की गई है।

1. 'प्राणी वही प्राणी है' कविता में भवानी प्रसाद मिश्र ने यह विचार व्यक्त किया है कि प्राणी, चाहे वह मानव हो या अन्य जीव, एक ही तरह की जीवनशक्ति से उत्पन्न होते हैं। वे संघर्ष, अस्तित्व की रक्षा और प्रेम के मूल सिद्धांतों में समान होते हैं। इस कविता में सभी प्राणियों के बीच एक गहरी समानता को महसूस किया जाता है, जहाँ मनुष्य को भी अन्य प्राणियों के साथ सम्मानपूर्वक और सहानुभूति के साथ जीने की बात की जाती है।
2. मनुष्यता कविता में भी कवि ने मानवीय गुणों, जैसे सहानुभूति, दया, और प्रेम, के महत्व को रेखांकित किया है। इसमें यह बताया गया है कि मनुष्य का असली धर्म यही है कि वह अपनी मानवता को बनाए रखे और दूसरों के प्रति दया और समझदारी दिखाए।

दोनों कविताओं में एक समान भाव यह है कि सभी प्राणी एक ही जीवनधारा से जुड़े हैं, और मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपनी मानवता को सही रूप से समझे, उसे औरों के साथ समानता और समझदारी से प्रस्तुत करे।

दोनों कविताओं में यह संदेश निहित है कि हमें दूसरों को सम्मान देना चाहिए, चाहे वे मानव हों या अन्य प्राणी।

पाठ 3: मैथिलीशरण गुप्त (मनुष्यता) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर, भावार्थ

मैथिलीशरण गुप्त की "मनुष्यता" पर आधारित प्रत्येक दोहे का भावार्थ

1. विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
   मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।

भावार्थ:

कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि मनुष्य नश्वर है, इसलिए मृत्यु से डरना व्यर्थ है। लेकिन मृत्यु भी ऐसी होनी चाहिए कि लोग उसे सदा याद रखें। ऐसा जीवन जियो कि मृत्यु भी प्रेरणाप्रद बन जाए।

2. हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
   मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।

भावार्थ:

यदि आपकी मृत्यु दूसरों के लिए प्रेरणा नहीं बनती, तो आपका जीवन और मृत्यु दोनों ही व्यर्थ हैं। जो केवल अपने लिए जीता है, वह असल में कभी जिया ही नहीं।

3. वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
   वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:

स्वार्थ में डूबा हुआ जीवन पशु-सदृश होता है। असली मनुष्य वही है जो दूसरों की भलाई के लिए जीए और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की आहुति भी दे दे।

4. उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
   उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।

भावार्थ:

जो उदार हृदय होकर दूसरों के लिए जीवन समर्पित करता है, उसकी महिमा सरस्वती स्वयं गाती हैं और पृथ्वी भी उसे धन्य मानती है।

5. उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
   तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।

भावार्थ:

उदार व्यक्ति की कीर्ति अमर होती है। संपूर्ण सृष्टि उसे पूजती है क्योंकि उसका जीवन परोपकार और त्याग से भरा होता है।

6. अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:

जिसके अंदर अखंड आत्मीयता हो, जो पूरे संसार को अपने आत्मभाव से देखे, वही सच्चा मनुष्य है। ऐसा व्यक्ति ही मानवता की सच्ची मिसाल होता है।

7. क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।

भावार्थ:

भूख से पीड़ित होने के बावजूद रंतिदेव ने अपना खाना दूसरों को दे दिया और महर्षि दधीचि ने लोककल्याण हेतु अपने हड्डियों तक का दान कर दिया।

8. उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।

भावार्थ:

राजा उशीनर ने अपने शरीर का मांस तक दान में दिया और दानवीर कर्ण ने खुशी-खुशी अपने शरीर की खाल तक दान कर दी। ये उदाहरण दिखाते हैं कि सच्चा मनुष्य वही है जो परोपकार के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर सके।

9. अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:

शरीर नश्वर है लेकिन आत्मा अमर। तो फिर मृत्यु का भय क्यों? जो दूसरों की भलाई के लिए अपने प्राण दे, वही सच्चा मनुष्य है।

10. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।

भावार्थ:

सहानुभूति एक महान गुण है, यही असली शक्ति है। इसी से पृथ्वी भी प्रभावित होती है और मनुष्य महान बनता है।

11. विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

भावार्थ:

दयालुता इतनी शक्तिशाली है कि कठोर से कठोर विचारधारा भी उसमें बह जाती है। नम्र और विनम्र लोग सदैव ऐसे परोपकारी जनों के आगे नतमस्तक रहते हैं।

12. अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:

जो दूसरों की भलाई के लिए काम करे, वही सच्चा उदार व्यक्ति है। वही असली मनुष्य कहलाने योग्य है।

13. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

भावार्थ:

धन और संपत्ति के अभिमान में मत डूबो। अगर तुम्हारे पास कुछ है, तो उसे अभिमान का विषय नहीं, सेवा का माध्यम मानो।

14. अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

भावार्थ:

कोई भी वास्तव में अनाथ नहीं है, क्योंकि सृष्टि के अधिपति त्रिलोकनाथ सबके साथ हैं। ईश्वर की कृपा सब पर है, इसलिए आत्मविश्वास रखो।

15. अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:

जो मनुष्य धैर्य खोकर व्यर्थ चिंता करता है, वह दुर्भाग्यशाली है। सच्चा मनुष्य वह है जो संयम रखकर दूसरों के लिए अपने जीवन को समर्पित करे।

16. अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।

भावार्थ:

इस अनंत ब्रह्मांड में अनगिनत देवता सहायता के लिए तत्पर हैं। हमें बस अपने प्रयासों में लगना है, क्योंकि सहायता सदैव हमारे पास ही होती है।

17. परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।

भावार्थ:
एक-दूसरे पर विश्वास और सहयोग से ही समाज का विकास होता है। एक-दूसरे का सहारा बनकर ही हम अमरता की ओर बढ़ सकते हैं।

18. रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:
कभी यह मत सोचो कि तुम किसी और की मदद नहीं कर सकते। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में दूसरों के लिए उपयोगी हो सकता है। असली मनुष्य वही है जो यह बात समझता है।

19. 'मनुष्य मात्रा बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।

भावार्थ:
हर मनुष्य एक-दूसरे का भाई है, यही सच्चा ज्ञान और विवेक है। सभी का उद्गम एक ही परमपिता से हुआ है।

20. फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।

भावार्थ:
मनुष्यों के कर्मों के अनुसार भले ही अंतर दिखें, परंतु आंतरिक रूप से सब एक समान हैं। वेद भी इस सार्वभौमिक एकता को प्रमाणित करते हैं।

21. अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:
यदि एक भाई दूसरे की पीड़ा को नहीं समझता और उसे दूर नहीं करता, तो यह बहुत बड़ा अनर्थ है। सच्चा मनुष्य वही है जो अपने जैसे दूसरे मानवों के लिए जिए और मरे।

22. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें डालते हुए।

भावार्थ:
अपने उद्देश्य की ओर बढ़ो, और रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को मुस्कुराकर सहन करो। यही जीवन का मार्ग है।

23. घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

भावार्थ:
आपसी प्रेम और मेलजोल में कभी कमी न आए, और न ही कोई भेदभाव हो। सभी को एक पथ के पथिक बनकर चलना चाहिए।

24. तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

भावार्थ:
जब कोई व्यक्ति स्वयं तो उन्नति करे ही, साथ ही दूसरों को भी उस मार्ग पर ले जाए—तभी उसकी सफलता सार्थक होती है। ऐसा ही व्यक्ति असली मनुष्य कहलाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर : 'मनुष्यता' कविता का मुख्य संदेश है कि सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के हित के लिए जीता और मरता है। केवल अपने लिए जीना पशु प्रवृत्ति है, जबकि मनुष्यत्व दूसरों के लिए बलिदान देने में है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने बताया है कि जो अपने जीवन को परोपकार और सहानुभूति में लगाता है, वही सच्चे अर्थों में मानव कहलाता है और युगों तक स्मरणीय रहता है।

प्रश्न 2: मैथिलीशरण गुप्त 'सुमृत्यु' को क्यों महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार सुमृत्यु वही है जो दूसरों के लिए बलिदान देकर प्राप्त हो। यदि मृत्यु के बाद लोग श्रद्धा से याद करें, तो वह मृत्यु सार्थक हो जाती है। केवल अपने लिए जीना और मरना व्यर्थ है। जीवन की सार्थकता परोपकार में है। ऐसे मनुष्य का अंत भी गौरवमयी होता है और वह समाज में आदर्श बन जाता है। इसीलिए कवि सुमृत्यु को गौरवपूर्ण मानते हैं।

प्रश्न 3: 'वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे' का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर: यह पंक्ति मानवता की सर्वोच्च भावना को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि सच्चा इंसान वही है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों की भलाई के लिए जीवन समर्पित करे। केवल अपने लिए जीना पशुता है, जबकि दूसरों के लिए त्याग करना मनुष्यता है। कवि ने बलिदानी व्यक्तियों को आदर्श बताया है जो दूसरों के हित में अपने प्राण तक अर्पण कर देते हैं।

प्रश्न 4: मैथिलीशरण गुप्त ने किन ऐतिहासिक पात्रों का उदाहरण दिया है और क्यों?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने रंतिदेव, दधीचि, उशीनर और कर्ण जैसे ऐतिहासिक व पौराणिक पात्रों का उदाहरण दिया है। ये सभी अपने-अपने समय में परोपकार के प्रतीक रहे हैं। रंतिदेव ने भूखे होने पर भी थाल दान किया,

दधीचि ने अस्थियां दान दीं, कर्ण ने शरीर तक दान कर दिया। इन उदाहरणों से कवि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 5: 'मनुष्यता' कविता में मैथिलीशरण गुप्त ने किस प्रकार सहानुभूति को महाविभूति कहा है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने सहानुभूति को महाविभूति कहकर उसकी महानता को बताया है। सहानुभूति वह भावना है जो दूसरों के दुःख को समझने और मदद करने की प्रेरणा देती है। यह भाव धरती को भी वश में कर लेता है। समाज में प्रेम, करुणा और सहयोग की नींव सहानुभूति पर ही टिकी होती है। इसी कारण कवि इसे सर्वोच्च मानवीय गुण मानते हैं।

प्रश्न 6: 'अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं' — इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर: कवि इस पंक्ति के माध्यम से हमें आत्मबल और ईश्वर विश्वास की प्रेरणा देते हैं। वे कहते हैं कि जब त्रिलोक के स्वामी हमारे साथ हैं तो हम कभी अनाथ नहीं हो सकते। मानव को चाहिए कि वह अभिमान न करे और स्वयं को अकेला भी न समझे। ईश्वर सदा दीनों के साथ रहते हैं और उनकी सहायता करते हैं। यह भावना इंसान को साहसी और उदार बनाती है।

प्रश्न 7: 'वृथा मरे, वृथा जिए' पंक्ति से मैथिलीशरण गुप्त का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता है, न समाज के लिए कुछ करता है और न ही किसी को लाभ पहुँचाता है, उसका जीवन और मृत्यु दोनों ही व्यर्थ हैं। जीवन की सार्थकता तभी है जब वह दूसरों के काम आए। ऐसा व्यक्ति भले जीवित रहे, पर समाज की दृष्टि में वह मृत समान होता है।

प्रश्न 8: कविता में पशु और मनुष्य के व्यवहार में क्या अंतर बताया गया है?

उत्तर: कवि ने पशु और मनुष्य में यह अंतर बताया है कि पशु केवल अपने लिए खाता है, सोचता है, और स्वार्थ में डूबा रहता है। जबकि मनुष्य में चेतना होती है, वह दूसरों के बारे में सोच सकता है, उनके लिए कार्य कर सकता है। यही सहभाव और परोपकार मनुष्य को पशु से अलग बनाते हैं और उसे श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।

प्रश्न 9: 'उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति फूजती' — इस पंक्ति का भावार्थ क्या है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि वही व्यक्ति समाज में सदा यशस्वी और स्मरणीय रहता है जो उदार और परोपकारी होता है। उसका नाम समय बीतने के बाद भी जीवित रहता है। उसका योगदान समाज को प्रेरणा देता है। उदार व्यक्ति की कीर्ति अमर होती है, और संपूर्ण सृष्टि उसे पूजती है। कवि ने इस प्रकार उदारता की महिमा को उजागर किया है।

प्रश्न 10: कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने किस प्रकार सहयोग और परस्परावलंबन का संदेश दिया है?

उत्तर: कवि मैथिलीशरण गुप्त ने मनुष्यों को परस्पर सहयोग करने का संदेश दिया है। वे कहते हैं कि जैसे आकाश में अनेक देवता खड़े हैं और अपने हाथ आगे बढ़ाए हुए हैं, वैसे ही मनुष्यों को भी एक-दूसरे का सहारा बनना चाहिए। सहयोग से ही समाज प्रगति कर सकता है। आत्मनिर्भरता के साथ-साथ परस्परावलंबन ही मानवीय विकास का मार्ग है।

प्रश्न 11: 'अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे' का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर: इस पंक्ति में मैथिलीशरण गुप्त ने आत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता पर बल दिया है। वे कहते हैं

कि हमारा शरीर तो नश्वर है लेकिन आत्मा अनादि और अविनाशी है। इसलिए केवल देह की रक्षा के लिए दूसरों की सहायता से मुंह मोड़ना उचित नहीं। सच्चा मनुष्य वही है जो जीवन और मृत्यु की चिंता किए बिना दूसरों के हित में अपने शरीर का त्याग कर सके।

प्रश्न 12: 'मनुष्य मात्रा बंधु है' — इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि संसार का प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे का भाई है। जाति, धर्म, रंग, भाषा आदि भले अलग हों, लेकिन सभी मानव एक ही ईश्वर की संतान हैं। इसलिए हमें सभी को बंधु भाव से देखना चाहिए और उनके दुःख-दर्द को अपना समझकर मदद करनी चाहिए। यही सच्ची मनुष्यता और मानवता की पहचान है।

प्रश्न 13: 'पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है' — इस पंक्ति के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर: इस पंक्ति में मैथिलीशरण गुप्त सभी मनुष्यों के एक समान ईश्वर के पुत्र होने की बात करते हैं। चाहे हम किसी भी देश, धर्म या जाति के हों, हमारा मूल एक ही है – ईश्वर। यह भाव मनुष्यता की नींव है। जब हम सभी को समान रूप से देखें और प्रेम करें, तभी समाज में सच्चा भाईचारा और शांति संभव है।

प्रश्न 14: 'चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए' — इस पंक्ति का भावार्थ क्या है?

उत्तर: इस पंक्ति में कवि जीवन को एक उत्सव मानते हुए कहते हैं कि चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, हमें अपने लक्ष्य की ओर प्रसन्नता से बढ़ते रहना चाहिए। दुःख और बाधाएँ हमारे आत्मबल को नहीं तोड़नी चाहिए। जो व्यक्ति कठिनाइयों में भी मुस्कराकर आगे बढ़ता है, वही सच्चा मनुष्य कहलाता है।

प्रश्न 15: 'विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?' — इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति करुणा, दया और परोपकार की भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है, तो संपूर्ण समाज उसके सामने श्रद्धा से झुक जाता है। उसकी विनम्रता और उदारता सभी को प्रभावित करती है। सच्चा मनुष्य वही है जो अपनी सहृदयता से दूसरों का दिल जीत ले।

प्रश्न 16: 'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में' — इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर: कवि मैथिलीशरण गुप्त इस पंक्ति के माध्यम से चेतावनी देते हैं कि हमें धन और संपत्ति पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए। यह सब तुच्छ और नश्वर है। जो व्यक्ति धन के कारण घमंड करता है, वह मनुष्यता से दूर चला जाता है। सच्चा धन वह है जो दूसरों के काम आए। अतः विनम्र और परोपकारी बनना ही श्रेष्ठ है।

प्रश्न 17: 'विरागवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा' — का अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर: यह पंक्ति बताती है कि भगवान बुद्ध का त्याग और विराग दया की भावना में लहराता रहा। उन्होंने संसार के दुखों को देखकर राजमहल छोड़ दिया और मानव कल्याण को अपना उद्देश्य बनाया। उनका जीवन परोपकार और करुणा का प्रतीक बन गया। कवि बुद्ध को उस उदार व्यक्ति का उदाहरण मानते हैं जो सच्ची मनुष्यता का अनुसरण करता है।

प्रश्न 18: मनुष्यता कविता का सामाजिक सन्देश क्या है?

उत्तर: इस कविता का सामाजिक सन्देश है कि समाज तभी प्रगति करेगा जब व्यक्ति स्वार्थ छोड़कर परहित में

लगेगा। प्रेम, करुणा, त्याग और सहयोग ही समाज को जोड़ने वाले तत्व हैं। सच्चा मनुष्य वही है जो अपने लाभ की चिंता छोड़कर दूसरों के दुःख में भागीदार बने और उनके लिए जीए। यही सच्ची मानवता है।

प्रश्न 19: कविता में आत्मभाव और विश्वभाव की क्या भूमिका है?

उत्तर: कविता में आत्मभाव और विश्वभाव को मानवता का मूल बताया गया है। कवि कहते हैं कि जब व्यक्ति आत्मा को व्यापक ब्रह्मांड का हिस्सा मानता है, तब उसमें परोपकार की भावना जन्म लेती है। यह भावना उसे संकीर्णता से ऊपर उठाकर सभी के हित में सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

प्रश्न 20: मनुष्यता कविता से विद्यार्थियों को क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर: विद्यार्थियों को इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि उन्हें केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और दूसरों के हित के लिए भी सोचना चाहिए। करुणा, परोपकार, सहयोग और सहानुभूति जैसे गुण अपनाकर वे सच्चे मानव बन सकते हैं। यह कविता उन्हें आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देती है और त्याग व सेवा का महत्व समझाती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि क्यों कहा जाता है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्रभक्ति, भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों का प्रभावशाली चित्रण किया। उनकी रचनाएँ जनजागरण और समाज सुधार से जुड़ी रहीं। उनका काव्य भारतीय आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति है।

प्रश्न 2: मैथिलीशरण गुप्त की भाषा-शैली की विशेषता बताइए।

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की भाषा सरल, सरस और खड़ी बोली आधारित थी। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग कर हिंदी को साहित्यिक गौरव प्रदान किया। उनकी शैली भावप्रधान और नैतिक मूल्यों से युक्त होती है, जिससे पाठक भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।

प्रश्न 3: 'भारत-भारती' काव्य का उद्देश्य क्या था?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कृति 'भारत-भारती' का उद्देश्य भारतीयों में राष्ट्रप्रेम, आत्मबल और सांस्कृतिक गौरव का संचार करना था। यह काव्य स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों को प्रेरणा देने वाला था, जिससे जनता में नवचेतना और उत्साह जागृत हुआ।

प्रश्न 4: मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचनाएँ हैं– 'भारत-भारती', 'साकेत', 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', और 'यशोधरा'। इन सभी में भारतीय संस्कृति, धार्मिक भावना और मानवीय मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है, जो उन्हें हिंदी काव्य के श्रेष्ठ रचनाकारों में स्थान दिलाता है।

प्रश्न 5: मैथिलीशरण गुप्त ने खड़ी बोली को कैसे प्रतिष्ठा दिलाई?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने खड़ी बोली में उत्कृष्ट काव्य रचना कर इसे साहित्य की मुख्य भाषा बनाया। इससे

पहले ब्रजभाषा अधिक प्रचलित थी, पर गुप्तजी की सरल और प्रभावी भाषा शैली ने खड़ी बोली को जनप्रिय और सम्मानित बना दिया।

प्रश्न 6: 'साकेत' महाकाव्य में मैथिलीशरण गुप्त की विशेषता क्या है?

उत्तर: 'साकेत' महाकाव्य में मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला के माध्यम से त्याग, सेवा और सहनशीलता की भावना का चित्रण किया। उन्होंने परंपरागत पात्रों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जिससे पाठक नए आयामों से परिचित हो सके।

प्रश्न 7: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में भारतीय संस्कृति का कैसे चित्रण हुआ है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में भारतीय संस्कृति, परंपरा, धार्मिकता और नैतिक मूल्यों का व्यापक चित्रण है। उन्होंने ऐतिहासिक व पौराणिक पात्रों के माध्यम से समाज को उचित दिशा देने का प्रयास किया, जिससे संस्कृति का गौरव पुनः जाग्रत हुआ।

प्रश्न 8: मैथिलीशरण गुप्त का काव्य किस प्रकार जन-जागरण में सहायक रहा?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में देशभक्ति और आत्मबल का संदेश था। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जनता में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना जाग्रत की, जिससे राष्ट्रीय चेतना मजबूत हुई और जन-जागरण को नई दिशा मिली।

प्रश्न 9: मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के चिरगांव नामक स्थान पर हुआ था। वे हिंदी साहित्य के महान कवि माने जाते हैं और उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 10: मैथिलीशरण गुप्त को किस काव्य रचना से प्रसिद्धि मिली?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त को 'भारत-भारती' काव्य रचना से विशेष प्रसिद्धि मिली। इस रचना ने स्वतंत्रता संग्राम के समय लोगों में राष्ट्रप्रेम और चेतना का संचार किया और उन्हें हिंदी कविता के प्रमुख राष्ट्रकवि के रूप में स्थापित किया।

प्रश्न 11: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में नारी पात्रों की भूमिका कैसी रही?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में नारी पात्रों को उच्च आदर्शों के रूप में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने उर्मिला, यशोधरा जैसी नारियों के माध्यम से त्याग, सहनशीलता और धैर्य का भावनात्मक चित्रण किया जो नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है।

प्रश्न 12: मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में कौन-सी प्रमुख भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में प्रमुख रूप से राष्ट्रप्रेम, सामाजिक चेतना, धार्मिक आस्था, नारी सम्मान और मानवता के आदर्शों की भावनाएँ व्यक्त होती हैं। उनका काव्य पाठकों को प्रेरणा, साहस और नैतिक मूल्यों की सीख देता है।

प्रश्न 13: मैथिलीशरण गुप्त का योगदान हिंदी साहित्य में क्या है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उन्होंने खड़ी बोली को कविता की भाषा बनाकर उसे

प्रतिष्ठा दिलाई। उनकी रचनाओं ने समाज को नैतिक दिशा दी और भारतीय संस्कृति को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया।

प्रश्न 14: मैथिलीशरण गुप्त किस प्रकार के कवि थे?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त एक राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से प्रेरित कवि थे। उन्होंने काव्य को जनसेवा और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बनाया। उनके लेखन में गहन संवेदना, आदर्शवाद और प्रेरणा देने की शक्ति निहित है।

प्रश्न 15: 'यशोधरा' काव्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कृति 'यशोधरा' में त्याग और नारी भावना का चित्रण है। इसमें गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की पीड़ा, सहनशीलता और आदर्शों को उभारा गया है, जिससे पाठक नारी के आंतरिक संघर्ष से जुड़ाव महसूस करते हैं।

प्रश्न 16: मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ आज भी प्रासंगिक क्यों हैं?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर आधारित हैं। उनकी रचनाएँ आत्मबल, सेवा, त्याग और राष्ट्रप्रेम का संदेश देती हैं, जो आज के समाज में भी उतनी ही आवश्यक हैं।

प्रश्न 17: मैथिलीशरण गुप्त ने नारी विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को सहनशील, त्यागमयी और आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने यशोधरा, उर्मिला जैसी नारी पात्रों के माध्यम से समाज को नारी की भावनात्मक शक्ति और महत्व का बोध कराया।

प्रश्न 18: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में पौराणिकता कैसे दृष्टिगोचर होती है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक प्रसंगों का प्रयोग मिलता है। उन्होंने इन कथाओं को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर उसमें समाजिक संदेश और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश किया।

प्रश्न 19: मैथिलीशरण गुप्त ने बालकों के लिए क्या विशेष रचनाएँ कीं?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त ने बच्चों के लिए भी प्रेरणात्मक और शिक्षाप्रद रचनाएँ लिखीं। उनकी कविताओं में नैतिक शिक्षा, राष्ट्रप्रेम और आदर्श चरित्र का भाव होता है, जिससे बाल पाठक प्रेरित होते हैं और अच्छे संस्कार ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 20: मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं से समाज को क्या लाभ हुआ?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं से समाज को नैतिक बल, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव की प्रेरणा मिली। उनकी रचनाएँ समाज सुधार, नारी सम्मान और धार्मिक सहिष्णुता जैसे विषयों पर लोगों का दृष्टिकोण सकारात्मक रूप से बदलने में सफल रहीं।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

प्रश्न 1: मैथिलीशरण गुप्त को किस उपाधि से सम्मानित किया गया था?

A) भारतरत्न

B) राष्ट्रकवि

C) ज्ञानपीठ विजेता

D) साहित्य सम्राट

उत्तर: B) राष्ट्रकवि

प्रश्न 2: मैथिलीशरण गुप्त किस भाषा के प्रमुख कवि थे?

A) ब्रज भाषा

B) उर्दू

C) खड़ी बोली हिंदी

D) अवधी

उत्तर: C) खड़ी बोली हिंदी

प्रश्न 3: 'भारत-भारती' किसकी रचना है?

A) हरिवंश राय बच्चन

B) रामधारी सिंह दिनकर

C) मैथिलीशरण गुप्त

D) तुलसीदास

उत्तर: C) मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 4: मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कहाँ हुआ था?

A) प्रयागराज

B) चिरगांव

C) लखनऊ

D) ग्वालियर

उत्तर: B) चिरगांव

प्रश्न 5: मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना 'साकेत' किससे संबंधित है?

A) महाभारत

B) बुद्ध

C) रामायण

D) कृष्ण लीला

उत्तर: C) रामायण

प्रश्न 6: 'यशोधरा' रचना में मुख्य पात्र कौन है?

A) यशोदा

B) उर्मिला

C) यशोधरा

D) रुक्मिणी

उत्तर: C) यशोधरा

प्रश्न **7:** मैथिलीशरण गुप्त ने किस भाषा को काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया?

A) अवधी

B) ब्रजभाषा

C) खड़ी बोली

D) संस्कृत

उत्तर: C) खड़ी बोली

प्रश्न **8:** मैथिलीशरण गुप्त का जन्म वर्ष क्या था?

A) 1875
B) 1886
C) 1890
D) 1901

उत्तर: B) 1886

प्रश्न **9:** 'जयद्रथ वध' किसकी रचना है?

A) रामधारी सिंह दिनकर

B) मैथिलीशरण गुप्त

C) सुभद्राकुमारी चौहान

D) निराला

उत्तर: B) मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न **10:** मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं का प्रमुख विषय क्या था?

A) प्रेम

B) रहस्यवाद

C) राष्ट्रप्रेम और संस्कृति

D) प्रकृति

उत्तर: C) राष्ट्रप्रेम और संस्कृति

प्रश्न **11:** 'पंचवटी' रचना का विषय क्या है?

A) कुरुक्षेत्र

B) कृष्ण कथा

C) राम-सीता का वनवास

D) रानी लक्ष्मीबाई

उत्तर: C) राम-सीता का वनवास

प्रश्न 12: मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि माने जाते हैं?

A) आदिकाव्य युग

B) भक्ति युग

C) रीतिकाल

D) आधुनिक युग

उत्तर: D) आधुनिक युग

प्रश्न 13: मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में किस भावना की प्रधानता है?

A) हास्य

B) करुणा

C) देशभक्ति

D) रहस्यवाद

उत्तर: C) देशभक्ति

प्रश्न 14: गुप्तजी की कविता 'साकेत' में किस नारी पात्र को प्रमुखता दी गई है?

A) सीता

B) उर्मिला

C) मंथरा

D) कैकेयी

उत्तर: B) उर्मिला

प्रश्न 15: मैथिलीशरण गुप्त की मृत्यु कब हुई थी?

A) 1947
B) 1955
C) 1964
D) 1968

उत्तर: D) 1964

प्रश्न 16: गुप्तजी की कविताएँ किस शैली में होती थीं?

A) छायावादी

B) प्रगतिवादी

C) गीतात्मक

D) काव्यात्मक राष्ट्रवाद

उत्तर: D) काव्यात्मक राष्ट्रवाद

प्रश्न 17: 'भारत-भारती' किस विधा में लिखी गई है?

A) नाटक

B) महाकाव्य

C) कविता संग्रह

D) खंडकाव्य

उत्तर: D) खंडकाव्य

प्रश्न **18:** मैथिलीशरण गुप्त ने साहित्य को किस दिशा में प्रेरित किया?

A) केवल मनोरंजन

B) सामाजिक सुधार और राष्ट्रप्रेम

C) रहस्यवाद

D) रोमांस

उत्तर: B) सामाजिक सुधार और राष्ट्रप्रेम

प्रश्न **19:** मैथिलीशरण गुप्त के पिता का नाम क्या था?

A) रामनाथ गुप्त

B) सेठ रामचरण गुप्त

C) रामसिंह गुप्त

D) गोविंदप्रसाद गुप्त

उत्तर: B) सेठ रामचरण गुप्त

प्रश्न **20:** गुप्तजी की कविता 'यशोधरा' किसके जीवन पर आधारित है?

A) रानी पद्मावती

B) राधा

C) गौतम बुद्ध की पत्नी

D) झांसी की रानी

उत्तर: C) गौतम बुद्ध की पत्नी

True or False (सही या गलत) – "मनुष्यता"

1. लेखक ने शेर की निर्दयता की सराहना की है।

   उत्तर: गलत

2. कवि के अनुसार, असली वीरता में दया और करुणा का भाव होना चाहिए।

   उत्तर: सही

3. कविता में एक शेर घायल व्यक्ति को मार देता है।

   उत्तर: गलत

4. कविता का उद्देश्य मानवीय संवेदनाओं को जगाना है।

   उत्तर: सही

5. लेखक के अनुसार, केवल परोपकार ही मनुष्यता का प्रतीक है।

   उत्तर: सही

6. कविता में मनुष्यता को दुर्बलता बताया गया है।

उत्तर: गलत

7. शेर ने घायल व्यक्ति की रक्षा की।

उत्तर: सही

8. मनुष्यता कविता में एक बाघ की क्रूरता का वर्णन है।

उत्तर: गलत

9. कवि का संदेश है कि केवल मनुष्य ही दया दिखा सकता है।

उत्तर: गलत (जानवर भी दया दिखा सकते हैं – जैसे शेर ने किया)

10. कविता का केंद्रीय पात्र एक साहसी सैनिक है।

उत्तर: गलत

11. 'मनुष्यता' कविता में लेखक करुणा और संवेदना को सर्वोपरि मानते हैं।

उत्तर: सही

12. कविता में यह बताया गया है कि मनुष्यता केवल मनुष्यों में होती है।

उत्तर: गलत

13. कविता में शेर का व्यवहार एक मनुष्य से भी अधिक मानवीय था।

उत्तर: सही

14. कवि ने यह बताया है कि वीरता बिना करुणा के अधूरी है।

उत्तर: सही

15. 'मनुष्यता' कविता केवल शिकार की कहानी है।

उत्तर: गलत

रिक्त स्थान भरिए (Fill in the Blanks):

1. मनुष्यता कविता के लेखक का नाम _____ है।

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त

2. कवि के अनुसार, वही मनुष्य है जो _____ के लिए मरे।

उत्तर: मनुष्य

3. दधीचि ने _____ का भी दान कर दिया।

उत्तर: अस्थिजाल

4. _____ ने भूखे को भोजन देकर करुणा का परिचय दिया।

उत्तर: रंतिदेव

5. कवि का मानना है कि जो केवल अपने लिए जीता है, वह _____ के समान है।

उत्तर: पशु

6. मनुष्य मात्र का बंधु होना ही _____ है।

उत्तर: विवेक

7. _____ लोक वर्ग दया-प्रवाह में बह गया।

उत्तर: बुद्ध

8. शरीर नश्वर है, पर आत्मा _____ है।

उत्तर: अनादि / अमर

9. कवि के अनुसार, परोपकार ही सबसे बड़ी _____ है।

उत्तर: उदारता

10. "मरो, परंतु यों मरो कि _____ जो करें सभी।"

उत्तर: याद

11. सरस्वती उसी की कथा कहती है जो _____ होता है।

उत्तर: उदार

12. त्रिलोकनाथ से _____ कोई नहीं है।

उत्तर: अनाथ

13. वीर कर्ण ने अपना _____ भी दान कर दिया।

उत्तर: चर्म

14. जो केवल स्वयं के लिए कमाता है, उसमें _____ नहीं है।

उत्तर: मनुष्यता

15. कवि के अनुसार, मानव जीवन का सबसे बड़ा मूल्य _____ है।

उत्तर: सहानुभूति / परोपकार